भारतीय ज्योतिष एवं खगोलशास्त्र का विकास

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम आधारों में से एक ज्योतिष और खगोलशास्त्र है, जो न केवल आचार-विचार और धार्मिक अनुष्ठानों का मार्गदर्शन करता रहा है, बल्कि विज्ञान, गणित, भूगोल और दर्शन के क्षेत्रों में भी गहन योगदान देता रहा है. भारतीय ज्योतिष का उद्गम वेदों के काल में हुआ, और इसे वेदांग ज्योतिष के रूप में मान्यता प्राप्त है. ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में नक्षत्रों, ऋतुओं, सूर्य-चंद्र के गति-क्रम और काल-गणना के अनेक उल्लेख मिलते हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि भारतीय समाज में समय की गणना और आकाशीय पिंडों के अध्ययन की परंपरा अत्यंत प्राचीन है. विशेष रूप से 'वेदांग ज्योतिष' के रूप में लघु एवं विस्तृत दोनों संस्करण, ऋग्वेदीय और यजुर्वेदीय शाखाओं में उपलब्ध हैं,जिनमें वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष और तिथि की स्पष्ट गणना का वर्णन मिलता है.

भारत में ज्योतिष और खगोलशास्त्र का प्रारंभिक स्वरूप धार्मिक और यज्ञीय आवश्यकताओं से जुड़ा था. यज्ञों के लिए उचित मुहूर्त का चयन, आकाशीय घटनाओं का निरीक्षण और पंचांग निर्माण, प्रारंभिक विद्वानों की मुख्य चिंताओं में से थे. समय के साथ यह ज्ञान और अधिक परिष्कृत हुआ, और गणितीय सूत्रों, त्रिकोणमिति, तथा भौगोलिक मानचित्रण का प्रयोग बढ़ा. वैदिक काल के पश्चात जब उपनिषदों और ब्राह्मण ग्रंथों का विकास हुआ, तब ज्योतिष केवल अनुष्ठानिक गणना तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह ब्रह्मांड के स्वरूप और ग्रह-नक्षत्रों की गति के दार्शनिक चिंतन से भी जुड़ गया.

ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दी के प्रारंभिक शताब्दियों में, भारतीय खगोलशास्त्र ने व्यवस्थित और वैज्ञानिक स्वरूप लेना शुरू किया. इस काल में 'लगध' जैसे आचार्यों का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्होंने 'वेदांग ज्योतिष' का सूत्रपात किया. उनके द्वारा वर्णित सौर और चंद्र वर्ष की गणना, नक्षत्र-क्रम और समय मापन की पद्धति, अपने समय के लिए अत्यंत सटीक थी. इसके पश्चात मौर्यकाल और गुप्तकाल के बीच ज्योतिष और खगोल विज्ञान का अद्वितीय विकास हुआ. गुप्तकाल को अक्सर भारतीय गणित-खगोल विज्ञान का स्वर्णयुग कहा जाता है, क्योंकि इसी समय आर्यभट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त जैसे महाविद्वानों का उदय हुआ.

आर्यभट (476-550 ई.) ने अपने 'आर्यभटीय' ग्रंथ में न केवल ग्रह-गति और त्रिकोणमिति के सिद्धांत प्रस्तुत किए, बल्कि पृथ्वी के गोलाकार होने और उसकी अपनी धुरी पर घूमने की वैज्ञानिक व्याख्या भी की. उन्होंने पाई (π) का मान 3.1416 तक निकाला, जो अद्भुत गणितीय सटीकता का प्रमाण है. वहीं, वराहमिहिर (505-587 ई.) ने 'बृहत संहिता' और 'पंच सिद्धांतिका' जैसे ग्रंथों में खगोलशास्त्र, ज्योतिष, मौसम विज्ञान, वास्तु, और प्राकृतिक संकेतों का विस्तृत वर्णन किया. उनकी पंच सिद्धांतिका में पाँच प्रमुख खगोल पद्धतियों—पौलिश, रोमक, वसिष्ठ, सूर्य और पितामह सिद्धांत—का तुलनात्मक विश्लेषण है, जो यह दर्शाता है कि भारतीय विद्वान अन्य सभ्यताओं के ज्ञान से भी संवाद कर रहे थे.

ब्रह्मगुप्त (598-668 ई.) ने 'ब्रह्मस्फुटसिद्धांत' में ग्रह-गणना, ग्रहण की भविष्यवाणी, और बीजगणितीय समीकरणों का अद्वितीय विकास किया. उन्होंने शून्य और ऋणात्मक संख्याओं के साथ गणना करने के नियम स्पष्ट रूप से बताए, जिसका प्रभाव बाद में अरब और यूरोपीय गणित पर भी पड़ा. उनके द्वारा दी गई ग्रहण-गणना पद्धति इतनी सटीक थी कि सदियों तक भारतीय पंचांग-निर्माता उसी पर आधारित रहे.

मध्यकाल में भी यह परंपरा जीवित रही. भास्कराचार्य (1114-1185 ई.) ने 'सिद्धांत शिरोमणि' और 'लीलावती' में गणित और खगोल विज्ञान को सहज और व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया. उनकी 'गोलाध्याय' खंड में खगोलीय गोले, देशांतर-अक्षांश, उदय-अस्त, और ग्रहण की गणना की अद्वितीय व्याख्या है. इसी काल में केरल स्कूल के गणितज्ञ-खगोलशास्त्री जैसे माधव ने त्रिकोणमिति में अनंत श्रेणियों का प्रयोग किया, जो यूरोप में कैल्कुलस के विकास से दो शताब्दी पहले की उपलब्धि थी.

भारतीय खगोल विज्ञान का वैश्विक संवाद भी अत्यंत रोचक है. यूनानी, बैबिलोनियाई और बाद में अरब विद्वानों के साथ विचारों का आदान-प्रदान हुआ. गुप्त और बाद के काल में भारत से अरब देशों में खगोल-ग्रंथ अनूदित हुए, जिनसे इस्लामी खगोलशास्त्र समृद्ध हुआ. फिर यही ज्ञान यूरोप में पहुँचा, जिससे पुनर्जागरण कालीन विज्ञान को गति मिली.

ज्योतिष के भविष्यवाणी पक्ष और गणितीय पक्ष का विकास साथ-साथ हुआ. पंचांग निर्माण, ग्रहण की भविष्यवाणी, मौसम का अनुमान, कृषि-चक्र निर्धारण, और राजकीय निर्णयों के लिए मुहूर्त चयन—ये सभी कार्य ज्योतिषियों और खगोलविदों की संयुक्त विद्वता से सम्पन्न होते थे. भारतीय समाज में ज्योतिष केवल भाग्य-विधान का साधन नहीं था, बल्कि यह समय-निर्धारण, दिशानिर्धारण और पर्यावरणीय अवलोकन का एक वैज्ञानिक उपकरण भी था.

औपनिवेशिक काल में यूरोपीय विज्ञान और खगोलशास्त्र भारत में आया, जिससे पारंपरिक पद्धतियों का पुनर्मूल्यांकन हुआ. ब्रिटिश काल में आधुनिक वेधशालाओं की स्थापना (जैसे मद्रास ऑब्ज़र्वेटरी, 1792) ने खगोल विज्ञान के गणनात्मक पहलुओं में सुधार लाया, किंतु पारंपरिक ज्योतिष का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व यथावत बना रहा. स्वतंत्रता के बाद भारतीय वैज्ञानिकों ने आधुनिक खगोलशास्त्र में उल्लेखनीय योगदान दिया, जैसे प्रो. मेघनाथ साहा और वि. ऐ. बेलवळकर, परंतु पारंपरिक ज्योतिषीय पंचांग-निर्माण और धार्मिक-खगोलीय गणना की परंपरा भी निरंतर चलती रही.

आज के भारत में ज्योतिष और खगोल विज्ञान दो अलग-अलग शाखाओं के रूप में विकसित हैं—एक ओर आधुनिक खगोलशास्त्र अंतरिक्ष यान, उपग्रह और रेडियो टेलीस्कोप के माध्यम से ब्रह्मांड का अन्वेषण कर रहा है, तो दूसरी ओर पारंपरिक वेदांग ज्योतिष, पंचांग और मुहूर्त विज्ञान अभी भी लाखों लोगों के जीवन का अभिन्न अंग है. यह द्वैत भारतीय संस्कृति की विशेषता है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता का

घर में रखे पुराने कपड़े बन सकते हैं दुर्भाग्य का कारण

आपकी अलमारी में ऐसे कई कपड़े रखें होंगे, जिन्हें आपने महीनों या सालों से नहीं पहना होगा. वहीं, कुछ ऐसे भी कपड़े घर में आपने जमा कर रखें होंगे, जो फटे पुराने होंगे. अगर, ऐसा है तो अनजाने में आप अपने घर में निगेटिविटी को न्योता दे रहे हैं, जो आगे चलकर आपके दुर्भाग्य का कारण बन सकता है.

दरअसल, ज्योतिष शास्त्र में पुराने कपड़ों का संबंध शनि और राहु से माना जाता है. जिन घरों में पुराने कपड़े होते हैं, वहां पर शनि और राहु का अशुभ प्रभाव रहता है. ऐसा होने पर आपकी तरक्की और सुख-समृद्धि में बाधा आ सकती है. इसलिए घर में और अलमारी में उन्हीं कपड़ों को रखें जो पहनने लायक हों और फटे-पुराने नहीं हों.

आइए जानते हैं पुराने कपड़ों का क्या करें-

- वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर पर फटे, पुराने और बेकार कपड़ों को तुरंत ही अलमारी से बाहर निकाल दें. इन कपड़ों की वजह से आपको आर्थिक और मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है.
- वास्तु शास्त्र के अनुसार कभी भी पुराने, बेकार और फटे हुए कपड़ों दान नहीं करने चाहिए. यदि आप किसी जरूरतमंद व्यक्ति को कुछ दान करना चाहते हैं, तो ऐसे कपड़े दें, जो पहनने लायक हों. यदि आपके पास काले कपड़े हों, तो उन्हें शनिवार के दिन दान करने से शनि दोष कम होता है.?
- वास्तु शास्त्र के अनुसार, बेरंग हो चुके कपड़े पहनने या उन्हें घर में रखे रहने से आपकी जिंदगी भी बेरंगी होने लगती है. इसी तरह दाग-धब्बे लगे कपड़े भी घर में नहीं रखने चाहिए. इसलिए इन कपड़ों को भी फेंक दें.

घर में अचानक कांच टूटना क्यों होता है शुभ?

यह किसी आने वाली मुसीबत के टालने का संकेत कहलाता है

वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर में अचानक कांच का टूटने को आमतौर पर शुभ संकेत माना जाता है. माना जाता है कि यह किसी आने वाली मुसीबत के टालने का संकेत है. कहते हैं कि आने वाली किसी मुसीबक को उस कांच ने अपने ऊपर ले लिया है और घर व परिवार के सदस्यों की रक्षा की है.

खासकर यदि यह किसी खिड़की या दरवाजे का कांच अचानक बिना किसी वजह से टूट जाए, तो इसे अच्छा माना जाता है. कुछ मान्यताओं के अनुसार, यह धन लाभ या किसी शुभ समाचार का भी संकेत हो सकता है. संभव है कि जल्द ही आपको अचानक किसी काम से धन लाभ हो सकता है.

टूटे हुए कांच को घर से हटा दें

हालांकि, टूटे हुए कांच को घर में रखना अशुभ माना जाता है. क्योंकि यह नकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करता है और घर में नकारात्मकता फैलाता है. कहते हैं कि घर में रखा टूटा कांच अपने साथ कई परेशानियां लेकर आता है. इसलिए घर में कांच के टूटने के बाद इसे तुरंत हटा देना चाहिए.

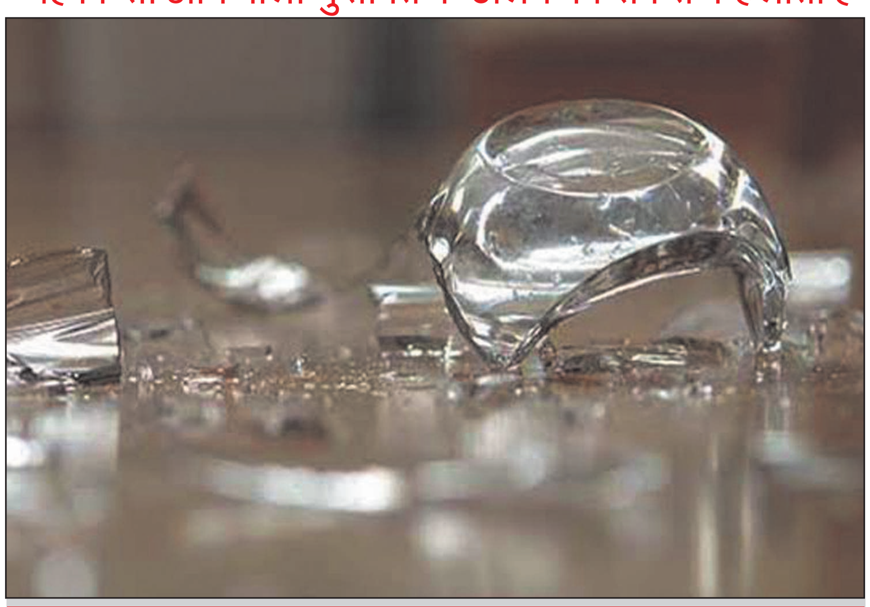

इन बातों का रखें ध्यान

- अगर किसी शुभ अवसर पर कांच या शीशा टूट जाते, तो इसे अपशकुन माना जाता है. टूटे हुए कांच को हटाते समय सावधानी बरतनी चाहिए, ताकि किसी को चोट न लगे. लिहाजा, इसे कूड़ेदान में फेंकने से पहले किसी मोटे कपड़े या कागज में लपेट लें.
- वास्तु के अनुसार, घर में गोल आकार का आईना या धार वाले शीशे का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए. यदि आप चौकोर आकार का आईना नहीं लगाना चाहते हैं, तो अष्टकोणीय डिजाइन को चुन सकते हैं.
- इसके अलावा आईने को कभी भी बेडरूम में नहीं लगाना चाहिए. यदि आपने बेडरू में इसे लगाया भी है, तो इस तरह से लगाना चाहिए कि सोते समय आपका प्रतिविंब इसमें न दिखे. यदि आप किसी ऐसी जगह पर हैं, जहां ये बदलाव करना मुमकिन नहीं है, तो उस शीशे पर कपड़ा डाल दें.

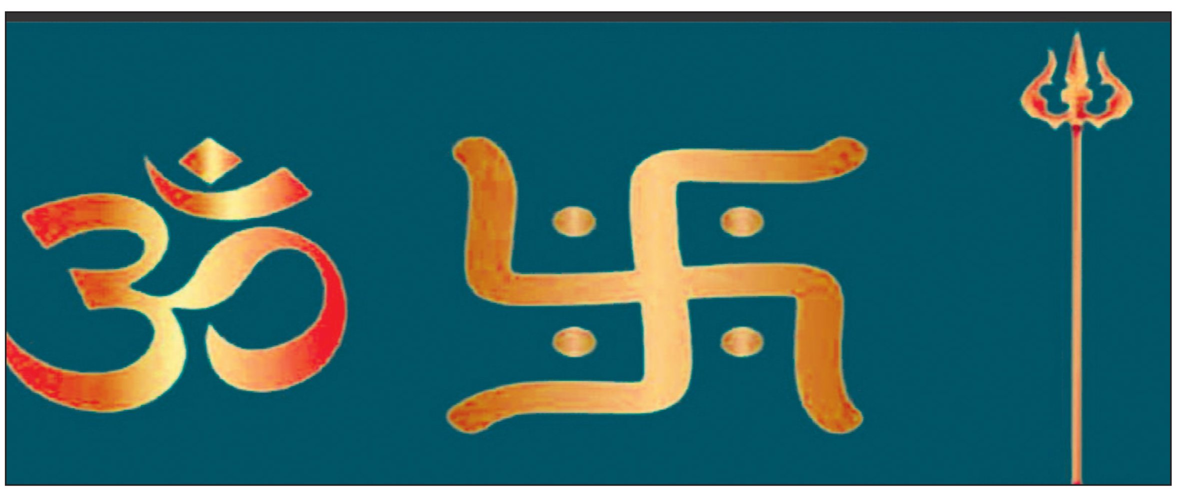

घर में सुख-शांति के लिए लगाएं ये धार्मिक चिह्न

हर कोई चाहता है कि उसके घर में सुख शांति बनी रहे. इसके लिए कई तरह के वास्तु उपायों को अपनाया जाता है. जैसे घर में नमक के पानी से पोछा लगाने से घर की निगेटिविटी दूर होती है. मगर, पॉजिटिविटी की क्या? उसे घर में लाने के लिए और लगातार बनाए रखने के लिए क्या करना चाहिए.

आप अपने घर में सकारात्मकता लाने वाले कुछ धार्मिक प्रतीक चिह्न जरूर रखें. ये प्रतीक चिह्न न सिर्फ आपके घर से नकारात्मक ऊर्जा को दूर रखेंगे, बल्कि लगातार सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह भी बनाए रखेंगे. आइए जानते हैं आप किन चीजों को घर में लगा सकते हैं.

स्वस्तिक का चिह्न

स्वस्तिक को हमेशा शुभ शुरुआत और सफलता का प्रतीक माना गया है. पहले के समय में हर शुभ कार्य से पहले घरों के दरवाजों पर स्वास्तिक का चिह्न बनाया जाता था. आज भी पूजा पाठ से पहले स्वास्तिक का चिह्न बनाया जाता है. घर के मुख्य द्वार पर इसे लगाने से वास्तु दोष दूर होता है और पॉजिटिव एनर्जी बनी रहती है.

ओम् का चिह्न रखना

ओम् को ब्रह्मांड की मूल ध्वनि माना जाता है, जो सृष्टि के प्रारंभ से है और हमेशा रहेगी. यह तीन अक्षर अ, ओ और म से मिलकर बनी है, जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश का प्रतिनिधित्व करते हैं. ओम् का जाप, ध्यान और श्रवण आध्यात्मिक विकास और शांति के लिए किया जाता है. ओम् इसका चित्र या शोपीस घर में लगाने से आध्यात्मिक ऊर्जा बढ़ती है.

कौन-सा पाया लाएगा भाग्य? सोना, चांदी, तांबा या लोहा?

बहुत से लोगों ने अपने घर के बड़े-बुजुर्गों को सोने, चांदी या लोहे के पैर के बारे में बात करते सुना होगा. यहां उनका मतलब पाये से होता है. दरअसल कुंडली के बारह स्थानों को चार पायों में बांटा गया है और इन्हें अलग-अलग नाम दिए गए हैं. जन्म के समय में चंद्रमा कुंडली में जिस स्थान पर होता है उसके अनुसार पाया के बारे में पता लगाया जाता है.

ऐसे जानें किस पाये में हुआ है आपका जन्म

सोना (स्वर्ण पाया)-जब चंद्रमा पहले, छठे या ग्यारहवें भाव में हो तो व्यक्ति का जन्म सोने के पाये में माना जाता है. श्रेष्ठता में ये पाया तीसरे नंबर पर आता है. कहते हैं इस पाये में जन्मे बच्चों को किसी भी काम में सफलता पाने के लिए कड़ी मेहनत करनी होती है.

चांदी (रजत पाया)- चंद्रमा दूसरे, पांचवें या नौवें भाव में हो तो चांदी के पाये का जन्म माना जाता है. ये सबसे शुभ पाया माना गया है. इस पाये के बच्चे अपने परिवार वालों के लिए बेहद लकी साबित होते हैं. ऐसे बच्चे मेहनती, संतुलित और सामाजिक होते हैं. माता-पिता का खूब नाम रोशन करते हैं. इन्हें जीवन में सबकुछ प्राप्त होता है.

तांबा (ताम्र पाया)- जब चंद्रमा तीसरे, सातवें या दसवें स्थान पर हो तो तांबे का पाया होता है. श्रेष्ठता क्रम में यह पाया दूसरे नंबर पर आता है. इस पाये में जन्मे बच्चे भी भाग्यशाली होते हैं. ये घर की सुख-समृद्धि में वृद्धि करते हैं.

लोहा (लौह पाया)- जब चंद्रमा चौथे, आठवें या बारहवें भाव में होता है तो बच्चे का जन्म लोहे के पाए का होता है. ज्योतिष में इस पाये को अशुभ माना जाता है. कहते हैं इस पाये में जन्मे व्यक्ति को जीवन में अधिक संघर्ष करना पड़ता है. लेकिन अगर मेहनत में कोई कसर न छोड़ी जाए तो ऐसे

राशिफल

दिनांक- 17 से 23 अगस्त 2025 तक

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य कर्क राशि में ता. 17 को 4.23 दिन से सिंह राशि में, मंगल कन्या राशि में, बुध कर्क राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र मिथुन राशि में ता. 20 को 2/26 रात से कर्क राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा वृषभ मिथुन कर्क और सिंह राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव:- ता. 17 को सूर्य मघा नक्षत्र सिंह राशि में प्रवेश करता है जिसके प्रभाव से बाजारों में जोदार तेजी के झटके आयेंगे, इन दिनों चांदी, सोना, तिल, ऐरेण्डा, सरसों अन्य सभी तिलहनों, दाख, गुड़, खाड़, शक्कर, हीरा, मिर्च, जवाहरात एवं शेयर बाजारों में जोरदार तेजी से व्यापारी तुरन्त लाभ लें. शीघ्र ही मंदी का रूख बनेगा. ता. 20 को शुक्र कर्क राशि में प्रवेश करता है जिसके प्रभाव से इन दिनों प्राय: सभ व्यापारिक वस्तुऐं तेजी की तरफरहेंगी, रूई चांदी में घटाबड़ी के बाद तेजी होगी, मूंगफ्ली, सरसों में अच्छी तेजी का लाभ मिलेगा, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, मोठ चना में अचानक तेजी का झटका आयेगा.

पर्व/व्रत/त्यौहार :

रविवार	17 अगस्त को	गोगा नवमी
सोमवार	18 अगस्त को	महाकाल शाही सवारी उज्जैन,
मंगलवार	19 अगस्त को	जया/अजा एकादशी व्रत
बुधवार	20 अगस्त को	प्रदोष व्रत
गुरूवार	21 अगस्त को	शिव चतुर्दशी व्रत
शुक्रवार	22 अगस्त को	श्राद्ध अमावस्या
शनिवार	23 अगस्त को	कुशोत्पाटिनी अमावस्या

मेष

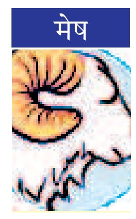

इस सप्ताह कुछ अच्छे दोस्त बन सकते हैं, जो आपकी मदद कर सकते हैं, घरेलू कार्यो को जिम्मेदारी से करें, टालमटोल की प्रवृत्ति का परिणाम हानिप्रद हो सकता है, घरेलू माहौल खुशनुमा रहेगा, सप्ताह के मध्य बढ़ते हुये खर्च सामने आयेंगे, व्यापार की कार्य योजना का विस्तार होगा, अधिक जल्दबाजी से निर्णय न करना हितकर रहेगा, सत्संग में रूचि रहेगी.

वृषभ

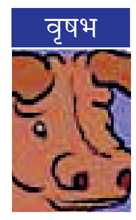

इस सप्ताह यदि अस्वस्थ्य हैं, और कमजोरी है, तो स्वास्थ्य में सुधार होगा, नये पार्टनरशिप के साथ कार्य के लिये समय अनुकूल है, अपने कार्य की क्षमता को पहचानकर कार्य करें, घरेलू मामलों के लिये सप्ताह अच्छा है, सप्ताह के उत्तरार्ध में भाग्य साथ देगा, लक्ष्य की प्राप्ति के लिये आपको अत्याधिक खर्च और परिश्रम करना पडेगा, अनुभवों का लाभ होगा.

मिथुन

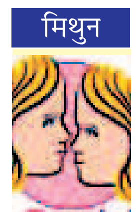

इस सप्ताह आपके अधिकारी व शुभचिन्तक धन कमाने में आपकी सहायता करेंगे, व्यापार से जड़े लोग बेहतर प्रदर्शन करें, सफ्लता मिलेगी, घरेलू आयोजन आनन्दमय रहेगा, आप अपने से जुड़े लोगों के साथ संवाद बनाये रखें, सकारात्मक दृष्टिकोण आपको सफ्लता दिलायेगा, कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी, आमदानी में वृद्धि होगी, जीवनसाथी की अपेक्षाएं बढ़ेगी.

कर्क

इस सप्ताह अकेले काम का बोझ उठा लेने से आपको नुकसान हो सकता है, अपने सहकर्मियों या अधिनस्थों केकारण कुछ परेशानी हो सकती है, नये कारोबार की शुरूआत ठीक रहेगी,पुकन्या गलती को भूलकर आगे बढ़े, जीवन आसान हो जायेगा, कार्यक्षेत्र में आप मुश्किलों का डटकर सामना करें, सप्ताह में आपको अपने प्रयासों में अच्छी सफ्लता मिलेगी.

सिंह

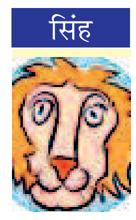

इस सप्ताह सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे, अपने घर में आप निर्माण संबंधी कोई सुधार कर सकते हैं, पुराना घर बेचकर नया घर खरीद सकते हैं, अविवाहितों को मनचाहा जीवनसाथी मिल सकता है, धार्मिक यात्रा होगी, छात्रों को कई मुश्किलों का सामना हो सकता है, व्यवसायिक वर्ग को नये अनुबंधों में शामिल होने के पहले विचार अवश्य करना चाहिये.

कन्या

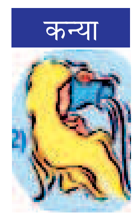

इस सप्ताह प्रापर्टी के बारोबार में अच्छा लाभ मिलेगा, व्यापारी आयात निर्यात के बारोबार की शुरूआत कर सकते हैं, अपने व्यवहार और आत्म विश्वास का प्रयोग कार्यक्षेत्र मेंकरेंगे, आप अतिरिक्त जिम्मेदारी को आसानी से निभा सकते हैं, सप्ताह के शुरूआत में आप भ्रमण की स्थिति मेंरहेंगे, परन्तु धीरे धीरे आप नये आयामों की ओर बढ़ेंगे, वित्तीय स्थिति से संतुष्ट रहेंगे.

तुला

इस सप्ताह आसपास का माहौल खुशनुमा पायेंगे, मेहमानवाजी में आनन्द महसूस करेंगे, आफ्सि में आपके खुले विचारों को कोई पसंद नहीं करेगा. अतीत से वर्तमान के साथ सामंजस्य बैठाने की कोशिश करेंगे, शेयर में धन निवेश से परहेज करें, व्यवसाय में सावधानी बरतें, आपसी संबंधों में अनदेखी न करें, संतान की उन्नति होगी, गुमी वस्तु मिलने का योग है.

वृश्चिक

इस सप्ताह आप अपने लक्ष्य को हासिल करने में सफ्ल रहेंगे, घर के सदस्यों के स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ेगा, आस पड़ोस या रिश्तेदारों के साथ संबंध सुधरेंगे, सप्ताह में व्यवसाय व्यापार में विस्तार की संभावना बरती हैं, मेल मुलाकात उपयोगी रहेगी, अधिनस्थ आपका सहयोग रहेगा.

धनु

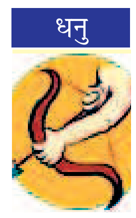

इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में आपको प्रतिभा दिखाने का बेहतर अवसर मिलेगा, आपको उत्तराधिकार का अवसर मिल सकता है, अपनी उदारता पर अंकुश रखा तो राहत मिलेगी, कार्यक्षेत्र प्रभावित होगा, छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा में सफ्लता मिलेगी, सप्ताह में किसी रिश्तेदार से सुखद समाचार मिलेगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी होगी.

मकर

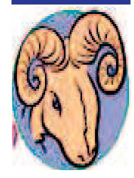

इस सप्ताह परिस्थिति के अनुकूल विनम्रता अच्छी सफ्लता दिला सकती है, बहसबाजी और मुंह पर बोलने की आदत पर रोक लगायें, कार्य और व्यापार को सिर्फ धन कमाने का साधन ही नहींसमझें, बल्कि वह प्रतिष्ठा का आधार भी मानें, सामाजिक जिम्मेदारी अच्छे से निभायेंगे, परिश्रम अधिक करना होगा, कार्यक्षेत्र में प्रभावशाली सिद्ध होंगे.

कुम्भ

इस सप्ताह आपको कठिन प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा, निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिये अधिकारी दबाव बना सकते हैं, पद प्रतिष्ठा प्राप्ति का योग है, पारिवारिक जीवन में प्रेम आनन्द की अनुभूति मिलेगी, सप्ताह के मध्य विपरीत परिस्थिति से डटकर मुकाबला करना होगा, आप सही और गलत के बीच उलझ सकते हैं, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

मीन

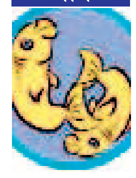

इस सप्ताह पहले से चले आ रहे कार्य जारी रहेंगे, नये कार्यो में हाथ न डालें, लंबे समय से जिस सफ्लता की उम्मीद कर रहे हैं, वह मिलेगी, कार्यक्षेत्र में आपको विरोधियों का सामना करना होगा, जोड़ों का दर्द, बुखार आदि से परेशानी हो सकती है, पारिवारिक कार्यो में सफ्लता मिलेगी, भावनात्मक संबंधों में निकटता आयेगी, प्रापर्टी से अच्छा लाभ मिलेगा.